चतुर्थ अध्याय

विष्णु प्रभाकर की कहानियों की विशेषताएँ

चतुर्थ अध्याय

विष्णु प्रभाकर की कहानियों की विशेषताएँ।

विष्णु प्रभाकर जी ने अनेक साहित्य का निर्माण किया है। उन साहित्य में उनका कहानी साहित्य सब से अधिक है। विष्णु जी के चार कहानी-संग्रहों के आधार पर कुछ समस्याओं के बाद जो विशेषताएँ देखने को मिलती है उनका विवेचन इस अध्याय के अन्तर्गत करने का प्रयास किया है। उनके साहित्य में जो यथार्थ, झूठ, पाखंड और विसंगति आदि विशेषताएँ देखने को मिलती हैं उन विशेषताओं का क्रमशः विवेचन आगे किया है।

१) झूठ और पाखण्ड --

झूठ और पाखण्ड की वृत्ति विष्णुजी की कुछ कहानियों में देखने को मिलती है। अपनी प्रतिष्ठा के लिए अपने आपको बेच देनेवाले लोगों की आज भी कमी नहीं दिखाई देती। ऐसेही एक व्यक्तिका चित्रण विष्णु प्रभाकर जी ने अपनी कहानी में किया है।

`ठेका` इस कहानी में एक ठेकेदार का चित्रण किया है। रोशनलाल और उनकी पत्नी सन्तोष राजकिशोर के घर पर पार्टी के लिए आने का निमंत्रण स्वीकारते है और पार्टी में रोशनलाल की पत्नी बादमें आने का वादा करती है। परंतु वह देर तक न आने के कारण रोशनलाल क्रोधित होते हैं तब राजकिशोर की पत्नी श्यामा उन्हें कहती है मैंने आज उन्हें मिस्टर वर्मा के साथ देखा था। यह सुनकर वह विचारों में फँस जाता है। उनके मस्तिष्क में बार-बार विचार आते है `वह क्यों नहीं आई। आखिर क्यों ? क्या वह सचमुच वर्मा के साथ थी ? सच मुच -- लेकिन उसने मुझसे क्यों नहीं कहा ? मुझसे क्यों छिपाया ? क्यों, आखिर क्यों ? उसका इतना साहस कैसे हुआ ? कैसे ....`[१] घर में आने के बाद सन्तोष आती है और उन्हें ठेके के बारे में कहती है तब पति उन्हें माफ करते है और कहते हैं

संतोष तुम कितनी अच्छी और बडी हो, मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ ....? इतना सब हो जाने के बाद भी अपनी पत्नी को माफ करने वाला पति पति नहीं हो सकता ।

` जज का फैसला ` इस कहानी में झूठ और पाखण्ड का चित्रण मिलता है । जज महोदय एक दुर्घटना के बारे में कहते हैं कि जिसमें पति और पत्नी श्यामील थे । पर उनकी रुपसी पत्नी के शरीर के कुछ भाग निकम्मा हो गया था । परन्तु पति को जब यह हाल अपनी पत्नी का मालूम हो गया तब उनके मनमें घृणा निर्माण हो गई और जो उनको अपना सर्वस्व लूटा देनेवाला पति उसका सौन्दर्य नष्ट हो जाने के कारण उन्हें मार डालता है । डाक्टर उन्हें उनकी हालत के बारे में बताते हैं तब वह कहता है," डाक्टर,मैं उसका चेहरा नहीं, उसे देखना चाहता हूँ । उसे ...."[२] परंतु यह उनके अंदर छीपी हुई एक झूठ और पाखण्ड की वृत्ति ने ही पत्नी को मार डाला । वह सिर्फ उसके सौन्दर्य पर ही शायद प्यार करता था यह इससे स्पष्ट हो जाता है।

` अधूरी कहानी` में लेखकने हिन्दू - मुस्लिम का चित्रण किया है । ईद के समय हिन्दू मुसलमानों को दूध देते थे । अहमद को भी एक मित्र दिलीप के घर से दूध मिलता है । दिलीप की माँ उन्हें सेवैयाँ के बारे में कहती है तब कहता है मैं आपको जरूर सेवैयाँ खिलाऊँगा । परंतु वादे के अनुसार अहमद सेवैयाँ लेकर जाता है।परंतु वहाँ दिलीप की माँ उसे कहती है हम तुम्हारे घर का खाना नहीं खा सकते इतने में दिलीप के बडे भाई ने कहा," तुम बहुत अच्छे हो परमात्मा तुम्हें खुश रखे । लेकिन हम हिन्दू हैं और हिन्दू लोग तुम्हारे हाथ का छुआ खाना पाप समझते हैं ।"[३] इसमें झूठ और पाखण्डी समाज का चित्रण मिलता है । धर्म के नाम हम एक-दूसरे से कितने दूर जाते है यह इसमें स्पष्ट अंकित होता है ।

` कैक्टस के फूल ` इस कहानी में झूठी प्रशंसा के पीछे भागती हुई एक स्त्री का चित्रण किया है । गिरीश एक साहित्यिक है और प्रेमा भी । वे दोनों एक-दूसरे से प्यार करते हैं और अन्त में शादी भी कर लेते है । कुछ दिनों के बाद प्रेमा घर से गायब होती है और दूर प्रान्त के एक साहित्यिक के पास पहुँचती है ।गिरीश

डिब्बे में उठ कर बैठा तो उसने एक ध्वनि सुनी वह उस दिशा की ओर कूद पडा । वहाँ जाकर देखा तो एक व्यक्ति एक युवती को पीटता है । उसे गिरीश कहता है ` उठो`। युवतीने आँखे खोली तो दोनों चौंक पडे । गिरीश चला रहा था तब प्रेमाने उसे कहा," गिरीश । रूको,रूको ।"[4] परंतु वह अन्ध:कार में खो गया । जो प्रेमा पहले गिरीश पर प्यार करती थी वही प्रेमा बाद में माग कर पस्ताती है । वह झूठ और पाखण्डी विचारों के कारण अपना नाश कर देती है ।

` समझौता` इस कहानी में जीने के लिए समझौते की आवश्यकता को स्पष्ट किया है । अनिरुध्द व्यापार में गढता जा रहा था । इसकी जानकारी उसके एक मित्र उसकी पत्नी आयशा को देता है । उसे अपने सामने सर्वनाश दिखाई देता है । आयशा अपने पति को बचाने के लिए कुछ मी करने को तैयार होती है परंतु वह सौदा नहीं करना चाहती । लेकिन सर्वनाश सामने दिखाई देने के कारण वह स्वयं तैयार हो जाती है । उसके सामने अपने पति के मित्र की मूर्ति उमरती है और उसी संध्या वह उसके पास पहुँची । वह आगे कहती है," काश कि मैं तब निष्ठुर बन पाती ... काश कि मेरा मन पत्थर हो पाता... ओह,हो पाता तो ...तो... लेकिन हो कैसे पाता,मेरी रंगो में तो.... मैंने,जैसे मैं पिछला सब कुछ मूल गई हूँ, उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट की । वह सदा की तरह मुस्कराता रहा । मेरे आँसुओं को पोंछता रहा । मैं जैसे सुध-बुध खो बैठी । मुझे कुछ-कुछ याद है, उसने कहा था -- जीवन,अदम्य जीवन,यही मनुष्य का लक्ष्य है । साहस,केवल साहस की जरूरत है । हर सुरंग के बाद प्रकाश होता है । इसी प्यारे शब्दोंने न जाने कब हमारे बीच की दूरी को मिटा दिया और मेरा व्यक्तित्व नष्ट हो गया और उस रात, उसी मोहक सान्त्वना के प्यारे नशे में मैंने उस सुन्दर पापी की सेज पर आत्मसमर्पण कर दिया।"[5] इतना सब होने के बाद मी पति उसे माप कर देते हैं ।

` एक मौत समन्दर किनारे ` इस कहानी की नायिका एक आधुनिक और स्वच्छंदतावादी स्त्री है । वह एक सेठ के यहा निजी सचिव के पद पर काम करती है । पत्रकार ललित बागची शैलेन्द्र का पुराना मित्र है । वह नंबर दो का धन बहुत कमाता तब उसे शैलेन्द्र पूछता है," क्या करते हैं,आप इतने धन का ? कहाँ रखते हैं इसे ? " ` एक बोरी मुझे नहीं दे दोगे ?" वे कहते हैं," धन दिया नहीं,लिया जाता है ।

तुममें ले जाने का साहस हो तो हम रोक नहीं पायेंगे । पर वह मार्ग तुम्हें स्वयं खोजना होगा - मेरी तरह,अपनी मित्र जाबाला की तरह" [६] आज भी ऐसे लोग दिखाई देते है कि जो धन को प्राप्त करने के लिए कोई भी काम करने को तैयार होते है ।

` सलीब ` इस कहानी में झूठ और पाखण्ड का चित्रण किया है । कुछ लोग भ्रष्टाचार के विरोधी होते है परंतु उन्हें भी भ्रष्टाचारी बनाने वाले लोग होते है । ऐसेही एक प्रमोद सक्सेना रेल विभाग में काम करने वाले है और उन्हें रिश्वत लेने के लिए मजबूर किया जाता है । प्रमोद सक्सेना ने कहा" मैंने किसी से रिश्वत नहीं माँगी, न किसी को हानि पहुँचाने की कोई चेष्टा की । लेकिन यह भी सच है कि जब मैं और मेरे साथी उनको यह सूचना देने के लिए गए कि उनकी गाडियाँ आ गई है तो उन्होंने हमें सौ रुपये दिए । कहा,आपने हमारे साथ अच्छा व्यवहार किया है उसी के लिए यह छोटी-सी रकम आप स्वीकार करें ।"[७] इसी तरह सत्य की राह पर चलने वाले लोगों को असत्य का मार्ग दिखाने वाले बहुत-से लोग है ।

` चन्द्रलोक की यात्रा ` इस कहानीमेंबताया है कि कुछ लोग झूठ बताकर पैसे दूसरों से लेते है उनमें उपेन्द्र अपने मित्र विमल से दूसरे एक मित्र की बात सुनाता है " मेरा यह मित्र कल एक प्रकाशक के पास गया था, उससे वह यह कहकर सौ रुपये लाया है कि उसकी पत्नी मैटरनिटी हॉस्पिटल में मृत्युशैया पर है ।"[८] झूठ बोल कर लोगों को फसाने वाले लोग बहुत होते है । उनके झूठ का अगर पत्ता चला तो उन्हें अपना राह जरूर बदलना पडता है । उनका समय बहुत कम होता है । झूठ तो झूठ ही होता है ।

` राजनर्तकी और क्लर्क का बेटा ` इस कहानी में राजनीतिमें पुत्र प्राप्ति के लिए और अपने राजगद्दी को आगे चलाने के लिए जो भी बुरे कार्य हो वे करनेवाले लोगों का चित्रण मिलता है । राजनर्तकी परम सुन्दरी तारा एक राज कन्या है तो वीरगढ के महाराज एक क्लर्क का बेटा है । परंतु एक बदले में दूसरे को खरीदा जाता है । क्योंकि अपनी परंपरा को कायम रखने के लिए । महाराज तारा से बोले कि मैंने प्रात:काल का तुम्हारा चित्र माँ को दिखाया तो माँ बोली - अरे !

यह तो मेरा चित्र है। कहाँ से उठा लाया ? सच ? हाँ,तारा ! दुर्भाग्यवश यह सच है। मैंने माँ से कहा - नहीं माँ। यह तुम्हारा चित्र नहीं है। माँ चकित-सी बोली,तो किसका है ? मैंने कहा - एक नर्तकी का। - सच मानना,यह सुनना था कि माँ का चेहरा राख हो आया। वह काँपने लगी। मैंने यह सब देखा तो मेरा कौतुहल एक शंका में परिवर्तित होने लगा।[९] यह सचाई महाराज तारा से बताते है। तब उन्हें इस झूठ का पत्ता लगता है।

२) सहज संवेदना —

सहज संवेदना यह विष्णु प्रभाकर जी की एक विशेषता है। उन्होंने अपनी इस विशेषता का प्रयोग बहुत-सी कहानियों में किया है। उनमें से कुछ प्रसिध्द और महत्वपूर्ण कहानियों का विवरण यहा दिया जा रहा है।

' धरती अब भी घूम रही है ' इस कहानी में कमल और नीना इन दो बच्चों की बातों से धरती घूम रही है ऐसा महसूस होता है। उनके पिताने बीस रुपये रिश्वत ली थी और उसमें उन्हें जेल जाना पडा। तब इन दो बच्चों की देखभाल उनकी मौसी और मौसा करते है। वे इन बच्चों को हर पल डाँटते रहते है। उन बच्चों ने रिश्वत के बारे में जो बात सुनी सुनाई थी वह तो उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था वे बोलते जाते है ' खूबसूरत होना भी क्या रिश्वत है ? मौसा कहते थे कि जैसे हाकिम के पास खूबसूरत लडकी भेज दो और कुछ भी करवा लो खूबसूरत लडकी और रूपया, रूपया और खूबसूरत लडकी - इन्हें लेकर जज और हाकिम काम क्यों कर देते है ? क्यों -- क्यों और खूबसूरत लडकी का वे क्या करते हैं ? काम करवाते होंगे, पर काम तो सभी करते हैं... फिर खूबसूरत लडकी की क्या ? ... और उसके मौसा बहुत-से रुपये लाते है,पर लडकी कभी नहीं लाते...[१०] सहज संवेदना के द्वारा वे दोनों बच्चे बातें बोलते हुए दिखाई देते हैं। लेखकने छोटे बच्चों के माध्यमसे बहुत बडी बात सफलता पूर्वक स्पष्ट की है।

' चाची ' इस कहानी में विष्णु प्रभाकर जीनेअपने सम्पर्क में आए एक व्यक्ति का चित्रण किया है। जिसे सभी लोग चाची कहते थे। उसकी मृत्यु के बाद लेखकने उनसे जो अनुभव किया था वह सहज रूपसे चित्रित किया है। चाची जब तक जिन्दा

थी तब तक उन्होंने घरके सभी लोगों पर हुकूमत की । उसी मुहल्ले के सभी लोग उनसे डरते थे । परंतु लेखक ने स्वयं इसका कभी भी अनुभव नहीं किया चाची ने उनपर बहुत प्यार किया था । चाची के बारे में विष्णुजी कहते है," प्यार और शत्रुता दोनों की चरम सीमा उसके लिए सहजगम्य थी । प्यार करती तो सब कुछ लुटा देती,दुश्मनी पर उतरती तो कचहरी तक चली जाती । उसकी आँखों से झरने की तरह प्यार झरता तो बरसाती नाले की तरह गालियाँ भी उमडतीं-उफनतीं... और मजाक पर उतरती तो वह चुटकी लेती कि तिल-मिला देती ।"[११] इसी तरह का अनुभव स्वयं लेखकने लिया था और वह चाची की मृत्यु के बाद लिख दिया है ।

' एक पुरानी कहानी' इस कहानी में हिन्दू-मुस्लिम समस्या का चित्रण है । डाक्टर योगेश हिन्दू है और अनवर मुसलमान । डाक्टर योगेश को जब अनवर अपने बच्चे की बीमारी के बारे में बताते है तब वह पहले वहाँ जाने को तैयार नहीं होते परंतु उन्होंने पढते समय उस मुहल्ले में एक बालीका देखी थी और वह सोचते है कि शायद वह बच्चा उस बालीका का तो न हो ? इस विचार से वे वहाँ चले जाते है । परंतु उन्हें वहाँ वह बालीका नहीं दिखाई देती । परंतु वे अपने फर्ज तो जरूर निभाते है । डाक्टर योगेश अनवर की बीवी को बोले" देखो बहन । आध-आध घण्टे बाद दवाई देनी है । बीचमें एक बार यह पुडिया देनी है और हाँ,चम्मच से मुँह में पानी बराबर डालते रहना । कभी कभी अपना दूध भी दे देना । समझा गई ?"[१२] वह हिन्दु-मुस्लिम यह भाव भूल गए थे ।

' एक अनचिन्हा इरादा ' इस कहानी में एक मध्य-वर्गीय परिवार का चित्रण अंकित किया है । बेटा अपने माँ-बाप के संघर्ष के कारण घर छोडकर जाता है । उसे अपने माँ-बाप के बारे में क्रोध आता है परंतु वह कुछ कर नहीं सकता । इसीलिए वह अपने भाई,बहन और माँ-बाप को छोडकर चला जाता है । वह उस जगह एक सिनेमा का इश्तिहार देखता है । जिसमें दो प्रेमी एक-दूसरे से प्यार करते हुए दिखाई देते है । वह इसको देखकर अपने माँ-बाप के बारेमें सोचता है । सोचते-सोचते रात होती है । उसे भूख भी लगी है । उसे लग रहा था कि जैसे कोई उसके बदन को प्यार से सहलाये,प्यार से पुकारे,कहे," अरे बेटा, तू कहाँ चला गया था ।

मैं तेरी राह देखते - देखते परेशान हो गई । तू कितना थक गया है । तूने खाना भी तो नहीं खाया । चल,चल,पहले तुझे गरम गरम खाना खिला दूँ ।"[१३] यही विचार उनके मन में सहज आते रहते है और वह उनमें उलझता हुआ अपने घर पहुँचा ।

३) घृणा --

घृणा यह विशेषताएँ भी कुछ कहानियों में देखने को मिलती है । शराबी, खूनी,जुहारी आदि बातों से यह घृणा अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देती है । ऐसी ही घृणा को विष्णुजी ने अपनी कहानियों में स्थान दिया है ।

` शरीर से परे ` इस कहानी में सुरेश की पत्नी रश्मि पति होते हुए भी दूसरे पुरूष के साथ प्यार करती है । मगर वह उन्हें नहीं चाहता । प्रदीप और रश्मि कि पहली मुलाकात एक पिकनिक पार्टी में हो जाती है । तबसे वह उनसे प्यार करने लगती है । वह अपने पति को न बताते,हुए प्रदीप से मिलती रहती है । प्रदीप उसे नहीं चाहता लेकिन वह प्रदीप को चाहती है । यह बात उसके पति सुरेश से जब मालूम होती है तब उनके बिच में संघर्ष निर्माण होता है और यही देखकर प्रदीप उस शहर को छोडकर चला जाता है । परंतु उनकी रचनाएँ हर समय रश्मि पढती है । यह देखकर सुरेशने चीखकर कहा," तुम मुझे धोखा देती रही हो, तुम मुझसे छल करती रही हो । तुम उससे प्रेम करती हो, तुम उसे चाहती हो ।"[१४] परंतु यह गलत फहमी उनकी प्रदीप के पत्र द्वारा दूर होती है और वे उनसे माफ कर देते है ।

` स्वर्ग और मर्त्य ` में चिर यौवना रूपसी उर्वशी पर राजा नहुष मुग्ध है । उसकी मुग्ध अवस्था के कारण वह कहती है अनंत लोक-लोकान्तर अस्तित्व में आकर विलीन हो जायेंगे, पर देवलोकवासी सदा यौवन की मादकता में बहते रहेंगे । महाराज ने उसे कहाँ यह सब तुम कैसे जानती हो कि मादकता क्या है ? रस किसे कहते है ? उर्वशी बोली ," जानने की जरूरत ही क्या है महाराज । जहाँ भेद-विभेद होते है, वहाँ जानने-पहचानने की आवश्यकता होती है । लेकिन यहाँ आवरण नहीं,सब कुछ नग्न है, सब कुछ एक रस है,एक-रूप है ।"[१५] जहाँ पर्दा ही नहीं है वहाँ घृणा जरूर होती है । सर्ग और मर्त्य में देवलोक और मनुष्य के बीच संघर्ष दिखाया गया है । जिसे देखकर घृणा निर्माण होती है ।

` छोटा चोर बडा चोर ` इस कहानी में भ्रष्टाचार का चित्रण मिलता है जिसे देखकर घृणा निर्माण होती है। हर एक व्यक्ति चोर है परंतु कुछ छोटे चोर है तो कुछ बडे। छोटे- चोर के रूप में एक सेवक अपने पिता को जरूरत होने के कारण अपने मालिक के बहुतसे कोटों में से एक कोट चुराता है। परंतु उसमें एक सोने की चैन देखकर वह बाबू को वापस लौटा देता है और उसी समय देखता है कि अपने मालिक भी ठेकेदार से रिश्वत के रूप में कुछ वस्तुएँ लेते है। परंतु नौकर की चोरी उसके सिध्द करने पर भी वे उसे डाँटते रहते है। एक जरूरत के कारण चोरी करता है तो दूसरा जरूरत न होने पर भी। यही देखकर घृणा निर्माण होती है। बडे बाबू ठेकेदार से कह रहे हैं" नहीं-नहीं,आप इन्हें ले जाइए। यह ठीक नहीं है। कोई क्या कहेगा।` ठेकेदार बोले," कोई कुछ नहीं कहेगा। खाने - पीने की चीजों में कोई दोष नहीं होता। रही चैन की बात। समझा लीजिए कि आपको कोई चैन मिल गई है। [१६]

` एक रात : एक शव ` इस कहानीमेंदेवर और भौजाई के प्रेम का चित्रण है। पति अपने पत्नी की चाल-चलन देखकर तालाब में डूबकर जान देते है। पति मर जाने के बाद तो वही संबंध और ही दृढ हो गए। इसका पता उनके पुत्रों को लगता है। बडा लडका दिनेश लन्दन चला जाता है। और बाद में छोटा सुरेश भी। अपनी माँ का यह व्यवहार देखकर उन्हें घृणा आती है। ताऊजी हुक्का पिते हुए बोले," लोग कहेंगे यह रहा उन लडकोंका बाप जो अपने को बाप कहते शरमाता है, जो कायर है,जो...." [१७] जो लोग इस तरह विवाह-बाह्य संबंध रखते है उससे बच्चों पर कौनसा आसर होता है यह वे नहीं सोचते। और इससे बच्चें अपनी माँ-बाप के बारे में घृणा की दृष्टि से देखते है। ऐसे लोगोंको समाज में कोई स्थान नहीं है।

` ढोलक पर थाप ` इस कहानी में पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण दिखाई देता है। मिसेज चावला के घर पर एक पार्टी का आयोजन किया है। वह एक पाश्चात्यों का अनुकरण करनेवाली स्त्री है। उनके यहा मिस्टर और मिसेज माथुर, थापर और सन्ना तथा मिस्टर गुप्ता भी आते है। पार्टी में मिसेस थापर शराब पीने के कारण मिस्टर गुप्ता बोले," मैं माई साहब नहीं हूँ। यह नाते-रिश्ते

स्थापित करने का विचार बहुत दकियानूसी है। मैं सिर्फ मिस्टर गुप्ता हूँ और आप मिसेज थापर हैं जो बहुत शीघ्र विदेश जा रही हैं। शराब पीना कर्तव्य है। और पंडितजी कहा करते थे -- " कर्तव्य ही धर्म है।' आपको आज पीनी ही होगी। अपने पति की कल्याण-कामना के लिए पीनी होगी।"[१८] इस तरह का वातावरण देखकर घृणा का भाव मन में निर्माण होता है।

' सत्य को जीने की राह' इस कहानी में दिल्ली महानगर की बस्तियाँ जल कर राख हो रही है इसका चित्रण है। इस घटनासे सन १९४७ की याद आती है। संदीप खन्ना अपने पड़ोसी सुरजीत सिंह के बारे में विनय बत्रा से उस समय की घटना सुनाते हैं। दिल्ली में बस्तियाँ जलकर राख हो रही थी उस समय सुरजीत और मैं वहाँ पहुँचे जहाँ एक खण्डहर होते मकान में एक सत्रह-अठारह वर्ष की यौवना को छोडकर कोई नहीं बचा था। सुरजीत ने चील की तरह झापट्टा मारकर उसे दबोच लिया और कीमती वस्त्रों और गहनों का बक्स प्राप्त किया। संदीप खन्ना बोले, " एक क्षण के लिए मेरे मन में एक बार फिर यह विचार कौंध गया कि जो कुछ हम कर रहे हैं वह तत्कालीन परिस्थितियों में अनुचित भले ही नहो, मानवीय तो किसी भी दृष्टि से नहीं है ... उचित होना ही मानवीय होने की शर्त नहीं है।"[१९]

लडकी को होश में आते देख सुरजीत ने उसका सीना चिर दिया। यह हमारे अन्दर छिपी हुई घृणा की भावना को स्पष्ट करता है।

' एक और कुन्ती ' इस कहानी में एक स्त्री की करुण कथा का चित्रण है। उस युवती का नाम प्रतिभा है। वह स्वस्थ सुन्दर, मोहक और आकर्षक है। वह अपने पति के साथ परिवार में रहती थी। अचानक एक दिन उनके घर पर आक्रमण हुआ और उसमें मेरे पति को मार कर मेरे साथ बलात्कार किया। मेरी चेतना लौटी तो सामने एक व्यक्ति को देखा। मैं एकाएक चीख उठी, " मैं कहाँ हूँ, यह कौन-सी जगह है ? तुम कौन हो ? मैं नहीं जानता, तुम कौन हो, तुम्हारे घरवाले कहाँ हैं। गुण्डे कुछ औरतों को भगाकर लिए जा रहे थे। लेकिन फौज ने उन्हें ढूँढ लिया। उस भुठभेड में बहुत-सी लडकियाँ इधर-उधर भाग गयीं। जब सब लोग चले गये तो मैंने तुम्हें एक खेत में बेहोश पडे पाया। मैं कौन हूँ, यह जानने की कोशिश मत करो अभी। इतना समझ लो कि मेरा नाम नूर है। तुम

बताओगी तो मैं तुम्हारे घरवालों को खोजने की कोशिश करूँगा ।"[20] उस युवती को हर समय नये मर्दों के पास जाना पड़ता है और उसका नतीजा भी उसे सहना पड़ता है । उसे अपने आप पर घृणा आती है ।

' चैना की पत्नी ' इस कहानी में चैना की पत्नी की यौन समस्या को चित्रित किया है । चैना की मृत्यु हो जाने पर उसका कार्य उसका बेटा रामसुख करता है। छप्पर बाँधने के कार्य से वे एक ठेकेदार बाबूजी से परिचित थे । रामसुख अपने बाबा चले जाने के बाद माँ के बारेमें सेठजी से बोला,' माँ भाग जाना चाहती है' क्या ...? ' जी हाँ । पास के गाँव में है वह, पर... पर... मैं बाबा की सौंह खाकर कहता हूँ, मैं उसे मार डालूँगा ।"[21] अपनी माँ की कृति को देखकर उसे घृणा आती है । और माँ को मारना चाहता है परंतु उसने ही उसे एक बार मारने का प्रयास किया था । बड़ी कुशलता से वह उसमें बच गया था ।

' चिरन्तन सत्य ' इस कहानी में पुलिस जनता पर किस तरह अन्याय करती है इस बात को चित्रित किया है । सन १९४२ की घटना एस.पी.साहब को याद है । वे काँग्रेसी नेता जानकीरमण बाबू को गिरफ्तार करने गये थे । उस समय गोविंद मिश्र को झूठे मुकदमें में जेल में रखा था । तब गोविंद मिश्र एस.पी.साहब से बोले," क्या तुम यह कह सकते हो कि तुमने जानकी की हत्या नहीं की ?"" हाँ, नहीं की, वह जेल में मरा था ।"" नहीं की ? क्या तुमने उसका जबड़ा अपने बूटों से नहीं कुचला ? क्या तुमने दवा पिला-पिलाकर उसके साथ पाप का नाटक नहीं खेला ? क्या तुमने "[22] इससे पुलिस की पशुता का दर्शन होता है । इस पशुता को देखकर घृणा निर्माण होती है । ऐसे कार्य करनेवाले कुछ लोग आज भी दिखाई देते हैं ।

४) <u>लोक कल्याण --</u>

लोक कल्याण की भावना विष्णु प्रभाकर जी की कुछ कहानियों में देखने को मिलती हैं । लोक कल्याण की भावना को जताने लोग आज बहुत कम है । आमतौर पर लोग स्वार्थ के पिछे भागते जा रहे हैं । जहाँ स्वार्थ है वहाँ लोक कल्याण की संकल्पना करना ही उचित नहीं है । परंतु विष्णुजी ने अपने साहित्य के माध्यम से

ऐसे पात्रों को स्थान देकर लोगों के मन में लोक कल्याण की भावना निर्माण करने की चेष्टा की है।

` गृहस्थी ` इस कहानी में लोक कल्याण की भावना को चित्रित किया है। वीणा के पति हेमेन्द्र एक निकम्मे व्यक्ति है। वे कुछ भी कमाते नहीं परंतु अपने मित्रों को घर पर लाकर भोजन देते है और यह सभी उनकी पत्नी को ही करना पडता है। घर में जो है वही वह बना कर उन्हें खिलाती है। परंतु अगर घर में नहीं होता तो अपने पडोसी से लाती और उन्हें खिलाती है। हेमेन्द्र के मित्र खाना खाने को आनेवाले है यह सुनकर वीणाने अपने मन की बात स्पष्ट की है," जी में आता है जिस किसी को खाने को कह देते है, पर यह नहीं सोचते कि खाना आएगा कहाँ से ? कोई बात है, मुझे दर-दर भटकना पडता है और ये हैं कि आराम से लेटे-लेटे जमीन-आसमान के कुलाबे मिलाते रहते हैं। दोस्तों के साथ ऐसे कह कहे लगाते हैं कि आसमान फटने लगता है।"[२२] पति के हर हिस्से में पत्नी का सहयोग रहता है।

` अभाव ` इस कहानी में एक सुन्दर और सुसंस्कृत दाम्पत्य का चित्रण है। उन्हें अपनी सन्तान नहीं है। फिर भी वे दु:खी नहीं है। अपने पडोसी प्रोफेसर रहते हैं उनके बेटी पर वे बहुत प्यार करते हैं। एक दिन वह बेटी मुँडेर से गिर पडी तब वह सुन्दरी प्रोफेसर की पत्नी से बोली, " आपने... ।` अरे छोडिए भी। बेबी को डाक्टर के पास ले जाना होगा। प्रोफेसर साहब आए तो कह दीजिए और देखिए,बेबी को लिटाए रखना चाहिए। जख्म गहरा है।"[२४] उस बेबी की माँ होते हुए भी वह सुन्दरी उस बेबी का बहुत खयाल करती है। इसमें स्वार्थ की भावनाएँ नहीं हैं तो लोक कल्याण की भावना है। इस भावनासे वह अपने जीवन के अभाव को दूर करती रहती है और उसमें ही आनंद की प्राप्ति करती है।

` नई ज्यामिति ` इस कहानी में एक रुपवती युवती नयनतारा का चित्रण है।वह एक अनाथ लडकी है। उसके बारे में शरण त्रिलोकीनाथ से बात करता है तब वे उन्हें अपनी बेटी के समान मानने को तैयार होते है। उसी के अनुसार वे उनके घर जाते है परंतु वह उन्हें गलत समझाती है। बाद में उनकी बेटी मृणाल आकर उन्हें मनाती है फिर भी वह राजी नहीं हो जाती क्योंकि वह कहती है," तुम क्या

यही कहने आई थी ` कृतज्ञ हूँ। पर सभी लोग मुझे असहाय क्यों समझाते है। मुझ पर अपनी कृपा और दया क्यो बिखेरना चाहते है। आखिर मैं इन्सान हूँ। मुझमें बुध्दि है, विवेक है। तो फिर *२५

कुछ लोक त्रिलोकीनाथ के जैसे लोक कल्याण की भावना को जतानेवाले दिखाई देते है।

` सलीब ` इस कहानी में रेल विभाग के भ्रष्टाचार का चित्रण है। प्रमोद सक्सेना रेल विभाग में कार्य करते है। परंतु उन्हें भ्रष्टाचार पसंद नहीं है। अत: वे उस विभाग में किस तरह भ्रष्टाचार चलता है यह अपने साहब को बता देते है तब उन्हें ही नौकरी से अलग किया जाता है। परंतु अंतिम समय में जो सच्चाई है उसे जान कर उनकी विजय हो जाती है। लोक कल्याण की भावना के कारण ही वे सच्चाई को लोगों के सामने रखते है। प्रमोद सक्सेना अपने पत्नीसे श्री दुर्गा-प्रसाद वोहरा ने कही हुई बात कहते है,* प्रमोद सक्सेना,आज देश को तुम्हारे जैसे व्यक्ति ही चाहिए। मैं चाहूँगा सब तुम्हारा अनुसरण करें हम। हम भ्रष्टाचार-निरोधक दलकी स्थापना कर रहे हैं। तुम्हारे सुझाव उसको भेज दुंगा और कहूँगा कि वह तुम्हारी सेवाओं का उपयोग करे।* २६

५) <u>सामाजिक आदर्श</u> --

हिन्दी कहानी के प्राचीन काल से लेकर आज तक सामाजिक आदर्श का चित्रण अनेक कहानीकारों द्वारा किया गया है। उसी तरहसे विष्णु प्रभाकर जी ने भी अपनी कहानियों में आदर्श की स्थापना करने का प्रयास किया है। परंतु उनके पात्र काल्पनिक लोक के प्राणी नहीं है, और न ही सुधारवादी दृष्टि लेकर हवा में उडनेवाले पछी। बल्कि इसी सृष्टि पर रहनेवाले मानव प्राणी हैं। उनकी नजर आकाश की ओर जरूर है पर पैर धरती पर गडे हुए हैं। ऐसे ही कुछ सामाजिक आदर्श को स्पष्ट करनेवाली कहानियोंका विवेचन यहाँ कर दिया है।

' सम्बल ' इस कहानी में एक पति-पत्नी का चित्रण मिलता है। पति शराबी है परंतु पत्नी उनकी काफी समझदार है। वह हर समय अपने पति को सँभलने का कार्य करती है। पति अगर नशे में किसीके साथ संघर्ष कर देते तो वह स्वयं उनके पास जाकर माफी माँगती है। वह एक आदर्श पत्नी होने के नाते ही यही सब गुण उनमें दिखाई देते हैं। मिस्टर सिंह और मिस्टर विज के बीच संघर्ष निर्माण हो जाता है तब मिस्टर सिंह की पत्नी उनसे माफी माँगने गई बोली, " क्या करूँ ? बहुत समझाती हूँ। वैसी बहुत कोशिश करते हैं, पर वक्त आने पर वे जैसे बेबस हो जाते हैं। आप कुछ ध्यान न कीजिए, मिस्टर विज। अब ऐसा नहीं होगा।" [२७] वह अपने पति के लिए किसी के भी सामने हाथ जोडती है।

' आश्रिता ' इस कहानी में एक विधवा युवती सोना का चित्रण है। सोना अपने पति की मृत्यु होने के बाद अपने पिता के घर आई थी। परंतु वहाँ भी उन्हें पिता की छाया नहीं मिलती। पिता की मृत्यु हो जाने के बाद वह अपने भाई किशुन के साथ रहती है। किशुन के मास्टर अजीत उनके घर पर आते हैं। वे उससे प्रेम करते हैं। वह भी उन्हें अपनाना चाहती है परंतु सामाजिक रुढियों के कारण वह उन्हें स्वीकार नहीं सकती। उसे लगता है कि जिसके आवरण के नीचे मैं रही हूँ उसके सामने मैं अपना आवरण नहीं हटा सकती। इसी विचार से वह वहाँ से चली जाती है और किसी दूसरे लडके के साथ शादी करती है। मास्टर अजीत के व्यवहार से कल्याणी दुलारी से बोली " मास्टर खरा सोना है।' कल्याणी आगे कहती है -" सो तुम ठीक कहती हो दुलारी। एक जीवन के बेटे को क्या ? न जाने कितनों को उसने जीवन दिया, पर बुरा काम तो बुरा ही है।" [२८] सोनाने कोई पाप नहीं किया जो उचित है वही सोच समझकर उन्होंने किया है।

' छोटा चोर बडा चोर ' इस कहानी में एक सेवक का चित्रण किया है। वह एक इमानदार सेवक है। उसको अपने पिताजी के लिए बडे बाबू के अनेक कोटोंसे एक कोट चुराने की चाह होती है। वह चोरी करता भी है। परंतु उसे अपने आप पर ही गुस्सा आता है कि यह मैंने गलत किया है मैंने चोरी की है। इसी विचारों के कारण वह कोट फिरसे बाबू के पास देता है। यह उनमें एक

आदर्श की भावना दिखाई देती है परंतु बाबु तो स्वयं रिश्वत के पुजारी ही मालूम होते है । वह बाबू के पास आकर बोला" यह आपका कोट है । यह आपकी चैन है । एक महीना पहले मैं इन्हें चुरा कर ले गया था ।इत्यादि---इत्यादि "२९

` मटकन और मटकन ` इस कहानी में सांत्वना और सर्वजीत का एक गाडी से जाते समय का चित्रण है । सांत्वना एक विधवा है और सर्वजीत उससे प्रेम करता है । वह भी उससे प्रेम करना चाहती है परंतु लोग लज्जा के कारण नहीं कर सकती । सर्वजीत उन्हें कुछ पीलाना चाहते है तब वह विरोध करती है । वह मचल उठा, " मैं नहीं हटूँगा किसी स्त्री ने मुझे आज तक पीछे नहीं हटाया` सांत्वना तडपकर बोली," लेकिन मैं हटा दूँगी । मर्द है तो उसे औरत चाहिए ही । मर्द तेज-पुंज है,औरत उसके तेज को झोलनेवाली, ये दलीलें अब बासी हो चुकी हैं । तुम्हारे जैसे चटोरे मर्दों के लिए नारी केवल वेश्या है ...."३० सांत्वना एक विधवा होकर भी अपना आचरण आदर्श रूप में कर देती है ।

`राजम्मा ` इस कहानी में एक आदर्शवादी मित्र का चित्रण है । नारायणन और राजगोपाल मित्र है । नारायणन की पत्नी राजम्मा उससे प्रेम करती है । परंतु राजगोपाल एक मित्र का फर्ज निभाता रहता है एक दिन उन दोनों की मुलाकात होती है तब राजम्मा राजगोपाल से बोली," क्यों, क्या तुमने नारायणन से यह नहीं कहा कि मैं तुमसे इस तरह बातें करने लगी हूँ जैसे कि तुम मेरे प्रेमी हो ।" ३१ अपने मित्र की पत्नी है यह वह कभी-भी भूलता नहीं । वह अपना अचरण ठीक तरहसे करता रहता है ।

` राग और अनुराग ` इस कहानी में एक आदर्शवादी दाम्पत्य का चित्रण मिलता है । बेटा और बहू अपने पिताजी को दिल्ली महानगर में अपने पास रहने को बुलाते है और वे भी मानकर आते है । पिताजी बहू बेटे को उपदेश हर समय देते रहते है । परंतु उससे उन्हें गुस्सा नहीं आता । वे उनकी बात को मानते है । पिताजी बहू सन्ध्या को उपदेश देते रहते है तब वह समझाती है कि हमें सुनना ही चाहिए । लेकिन ...." वह बोली,` न-न, कोई लेकिन-वेकिन नहीं, हमारे भले के लिए ही तो कहते हैं । हमारे सुख का जितना ध्यान उन्हें

होगा, उतना और किसे होगा ।"[३२] वे पति-पत्नी आदर्शवादी है यह इस कहानी से स्पष्ट रूप से दिखाई देता है ।

६) यथार्थ का चित्रण --

यथार्थ का चित्रण साहित्य में होना महत्वपूर्ण है । विष्णुजी के साहित्य में इसका कहीं-ना-कहीं दर्शन जरूर मिलता है । सामाजिक यथार्थ को साहित्य के माध्यमसे लोगों के सामने लाने का प्रयास विष्णु प्रभाकर जी ने अपनी कुछ कहानियों के माध्यम से किया है । उनकी दृष्टि सामाजिक यथार्थता को ढूंडने का कार्य करती है और वे ऐसे साहित्य का निर्माण भी करते समय जीते-जागते व्यक्तियों को साहित्य में लाते हैं । ऐसी ही कुछ कहानियों का चित्रण यहाँ किया गया है ।

` धरती अब भी घूम रही है ` इस कहानी में सामाजिक भ्रष्टाचार का यथार्थ पूर्ण चित्रण किया है । समाज में जरूरत होने पर जो बीस रुपये की चोरी करता है,उसे जेल में जाना पडता है । परंतु पाँच सौ रुपये रिश्वत लेनेवाला समाज में खुले आम घुमता है ।यह आज की भी स्थिति दिखाई देती है । आज मनुष्य को जीना मुश्किल हो गया है । उसे हर पल भ्रष्टाचारी से सामना करना पडता है । जज और अन्य लोग रिश्वत लेकर डाकू को कैसे छोड देते है इस बात का पता नीना और कमल इन दो बच्चें के लगनेसे वे जज से वही सवाल करके अपने पिता को छोडने का आग्रह कर बैठते हैं । उन दो बच्चों के बातों से धरती जैसे घूम ही रही है ऐसा साबीत हो जाता है ।मौसा मौसी को कहता है " , हाँ बहिन के बच्चे हैं तभी तो बहनोई साहब को रिश्वत लेने की सूझी और रिश्वत भी क्या थी,बीस रूपये की ।वह भी लेनी नहीं आई । वहीं पकडे गए । हूँ, मैं रात पाँच सौ लाया हूँ । कोई कह दे,साबित कर दे । "[३३] मौसा तो खुला समाज में फिरता है । यह वास्तविकता आज भी दिखाई देती है ।

` रहमान का बेटा ` इस कहानी में रहमान का बेटा सलीम सामाजिक अन्यायों के कारण अपना घर छोड कर चला जाता है । उसे अपने परिवार की

गन्दगी के बारे में अच्छा नहीं लगता । वह उस परिवार के लोगों को सुधारना चाहता है । ऊँचे लोगों की रहन सहन और आचरण के कारण उसे बहुत बुरा लगता है । गरीबों के खून को पीनेवाले लोगों की समाज में कमी नहीं है । इन सभी अवस्थाओं को बदलने के लिए सलीम अपना घर छोड कर चला जाता है । जाने से पहले उन्होंने जो बात कही थी वह अपने घर आकर लडकी कहने लगी " अम्मीं, मइया ने बहुत-सी, बहुत-सी बातें कही थीं । हम गन्दे रहते हैं, हम अनपढ हैं, हमचोरी करते हैं । हमें बोलना नहीं आता । हमें खाने को नहीं मिलता.... ।" [३४] यह सलीम के घर की ही अवस्था नहीं है तो आमतौर पर लोगों के घर की यह बात है ।

` अधूरी कहानी ` इस कहानी में हिन्दू-मुस्लिम समाज में जो भेद है वही स्पष्ट रूपसे लेखकने बताया है । इस कहानी का एक पात्र स्वयं विष्णूजी रहे है । ईद के लिए हिन्दू-मुस्लिमों को दूध देते है परंतु उनके हाथ का बना हुआ खाना पाप समझाते है और खाते नहीं । लेखक ने एक प्रश्न पूछने पर मुसलमान भाई बोले," मैं जानता हूँ आज आप उन्हें अपने बराबर मानते हैं । मेरे ऐसे हिन्दू दोस्त है,जो इन्सान-इन्सान के बीच के भेद को दुनियाका सबसे बडा पाप समझाते हैं । पर मेरे दोस्त भेद की इस लकीर को बराबर गहरी करने में, जाने या अनजाने,जो लोग मदद करते आए हैं, उनके पापों का फल तो भुगतना ही पडेगा ।" [३५] हिन्दू-मुस्लिम के बीच जो जाति को लेकर एकदूसरे के मन में जो भाव निर्माण हो गये है वे सहज रूपसे नहीं मीट पाते ।

` मेरा बेटा ` इस कहानी में हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष दिखाया है । कानपुर का रामप्रसाद हिन्दु-मुस्लिम दंगे में जख्मी होता है और उसे बचानेका कार्य डा.हसन करते है । डा.हसन को उनके अब्बाने उस जख्मी के बारे में पुछा तो वे उनकी हालत अब ठीक है यह कहकर कहते है कि वह बच गया है । अब्बा अपने बेटे को उस जख्मी रामप्रसाद के बारे में जानकारी देते है और कहते है वह मेरा बेटा है । मगर वह मुझसे मेरे बेटों से नफरत करता है पर मैं उससे नफरत नहीं करता । अब्बा आगे कहते है," हसन,मैं उससे पूछूगा, मैं मुसलमान हो गया तो क्या हुआ,हमारा बाप-बेटे का नाता तो नहीं टूट सकता, आखिर उसकी रंगों में अब भी मेरा खून बहता है,

इतना ही जितना अनवर की रगों में बहता है, शायद ज्यादा....'[३६] धर्म की दीवार के कारण बाप-बेटे के बीच संघर्ष निर्माण हुआ है।

` पुल टूटने से पहले ` इस कहानी में यथार्थ का चित्रण मिलता है। लेखक की और एक मित्र की मुलाकात एक रेस्टारां में हो जाती है दोनों एक दूसरे के बारे में चाय पीते समय पुछते है। विष्णूजी कहते है कि मैंने आपसे कहा की कुछ दिन के लिए मैं दूसरे रेस्तरां में जाता हूँ। मगर सच यह है कि,' उन दिनों मैं घर से निकलता ही नहीं। जेब में पैसे ही नहीं होते। पत्नी हर माह मुझे एक निश्चित रकम देती है। कभी-कभी वह जल्दी खर्च हो जाती है। तब शेष दिन मैं घर बैठकर लिखने-पढने में गुजार देता हूँ।' [३७]

विष्णूजी ने अपनी और अपने मित्र के बीच जो बात होती है उसे बडी रोचक और मार्मिक शैली में व्यक्त किया है। यह उनकी यथार्थ का ही एक पहलू दिखाई देता है।

` फासिल इन्सान और.....' इस कहानी में एक कलाकार का चित्रण किया है। विनोद शंकर के अभिनय-कला के सभी चित्र-प्रदर्शित किए गए थे। विनोदशंकर एक कलाकार होने के नाते उन्होंने बहुत से नाटकों में अभिनय किया था। वे एक महान कलाकार है। उनकी ख्याती के कारण बाहर के लोग उन्हें इज्जत देते है परंतु उनके घर के लोग उन्हें इज्जत नहीं देते पत्नी तो हर समय उनपर बरसती रहती है। एक दिन वे अपनी बहू को कुछ बाते समझा रहे थे तभी उनकी पत्नी सरला का स्वर उनके कानों में गूंज उठा। पास आती हुई वह बोली,' क्या पुराण-गाथा ले बैठे हो। बोलना शुरु करते हो तो जैसे नशा चढ जाता है।' [३८] कलाकार कितना भी बडा क्यों न हो उसे अपने घर में इज्जत कम ही मिलती है यह सचाई है।

` अन्धेरे आंगन वाला मकान ` इस कहानी में दो वृध्द दम्पति का चित्रण है। उनका मकान बहुत बडा है परंतु उनके पास बेटे बहू आदि कोई भी नहीं है। वे दोनों अपने घर पर आनेवाले अतित का स्वागत करते है। उन्हें उनसे मिलकर बहुत खुशी हो जाती है। ऐसेही एक दिन उनके बेटीकी सहेली अपने पति के साथ वहाँ

आती है। वह वृध्दा उनका अतिथ्य ठीक तरह से करती है। उन्हें अपने घर पर वे आने की खुशी हो गई है। जब बहू बेटे घर छोड़कर बाहर चले जाते है तब माँ-बाप की हालत किस तरह होती है। यह बताने का प्रयास इस कहानी में किया है। वृध्दों को इस अवस्था में पैसे की जरुरत से जादा प्रेम की जरूरत होती है। वे अपनी सन्तान के प्रेम से परे हो जाते है। माताजी खाना पकाने की तैयारी करती है तब दीप्ति बोली, " माताजी, आप क्यों कष्ट कर रही हैं ? हम अपने रिश्तेदार के घर से खा-पीकर आ रहे हैं। हमें तो बस आपसे और मंजुला से मिलना था। बात काटकर माँजी बोली, " मंजुला होती तो बेटी क्या तुम मना करती ? [३९]

' एक और कुन्ती ' इस कहानी में नारी की पीड़ा का चित्रण मिलता है। नारी के सौन्दर्य को प्राप्त करने के लिए हर व्यक्ति प्रयास करता है। वह उस औरत से प्यार नहीं करता तो उसके सौन्दर्य से करता है। ऐसे ही एक नारी का चित्रण इसमें किया है। प्रतिमा नामक युवती के साथ प्रथम उसके पति के सामने बलात्कार किया जाता है जिसका नतिजा वह एक बेटे की माँ बनती है। इनके घर पर आक्रमण होने के कारण उन्हे हर समय नये मर्दों के पास जाना पड़ता है। एक दिन प्रोफेसर फारुखी से मुलाकात होती है वह कहता है तुम यहीं रह सकती हो। मै जानती थी, " मैं खूबसूरत हूँ और जवान हूँ। इन दो ढाई वर्षों में मैंने क्या कुछ नहीं भुगता। लेकिन यौवन का ज्वर तो जैसे मेरे शरीर में अड़ी मारकर बैठ गया था। मौत बार-बार पास आकर लौट जाती थी। इस बार भी लौट गयी। मैं एक जिन्दालाश की तरह जीती रही। "[४०] यह मेरे जीवन की [illegible] है जो कुन्ती को भी भुगतनी पड़ी थी।

' चन्द्रलोक की यात्रा ' इस कहानी में एक म[illegible]ीय लेखक का चित्रण मिलता है। उपेन्द्र एक लेखक है। उसे उस व्यवसा[illegible] बहुत कम पैसे मिलते है। अत: वह अपने परिवार का पालन ठीक तरह से न[illegible] सकता। यह आज भी आम तौर पर इन लोगों की स्थिति है। लेखक की [illegible]में बहुत इज्जत होती है। परंतु इज्जत से पेट नहीं भरता उसे [illegible]त होती है। उपेन्द्र की पत्नी जब पैसे की माँग करती है तब वे कहते रुपयों[illegible]न्ता क्यों करती हो, समस्याएँ आती ही इसलिए है कि वे हल हों समस्याओं का हल भी निकल आयेगा। आज पैसा

नहीं है तो क्या कल भी नहीं होगा ? उसे होना होगा ।"[४१] आदर्श को पालने वाले लोगों की यही स्थिति हो जाती है । यह यथार्थता आज भी कुछ लोगों में दिखाई देती है ।

` राजनर्तकी और क्लर्क का बेटा ` इस कहानी में यथार्थ का चित्रण मिलता है । राजगद्दी को चलाने के लिए बेटे की अवश्यकता होती है । अगर बेटा उत्पन्न नहीं हो जाता तो किसी दूसरे के बेटे को खरीद लेते है । और वह बाद में राजा बन जाता है । परंतु जो सचाई है वही एक-न-एक दिन सामने आती है । जब सचाई सामने आती है तो उसका सामना करने की क्षामता उनमें नहीं होती । और उसमें उस राजमाता का अन्त हो जाता है । तारा एक राजकुमारी है परंतु उसे बेचकर एक क्लर्क का बेटा राजगद्दी के लिए खरीदा जाता है और इस बात का पता वह बेटा लगाता है । माँ अपनी बेटी को बेटी मानने को तैयार नहीं होती । राजपुत्र ने जो राजमाता से कहानी सुनी थी । जब वह संतान को जन्म देनेवाली थी तब महाराज ने उससे कहा था," इस बार पुत्र नहीं हुआ तो मेरे वंश को राजगद्दी से हाथ धोना पडेगा । वह पुत्र के लिए पागल थे । राजमाता की भी यही अवस्था थी, परंतु ज्यों-ज्यों दिन बीतते थे,लक्षाण कन्या के आगमन की सूचना को पुष्ट करते जान पडते थे ।वह बुरी तरह घबरा उठी । उन्हें अपना भविष्य अंधकारमय जान पडने लगा । ठीक इसी समय राज घराने की पुरानी दासी ने उनके कानों में एक मंत्र फूंका - कन्या को बदला जा सकता है ।"[४२] और बाद में यही हो गया` जिसकी सचाई अन्त में मालूम हो जाती है ।

` भूख और कुलीनता` इस कहानी में एक सेठ के पास भीख माँगने के लिए जाने वाली माँ का चित्रण है । उसका बेटा प्रमोद से यह बात ठीक नहीं लगती तब उसे क्रोध आता है । वह माँ की मुँह से यह बात को सुनना चाहता है । इसमें सचाई क्या है यह वह अपनी माँ की से सुनना चाहता है परंतु लाख कोशिश करने पर भी माँ का अन्त हो है । सुधीर ने प्रमोद से पूछा" आखिर वह क्या बात है जो आपकी को इतना दुखी कर रहा है ? वह बोला" उसी के बारे में मैं माँ से पूछना चाहता हूँ । काश, कि वह एक बार बोल सकती तो मैं

पूछता कि क्या सचमुच तुमने भीख माँगी थी माँ ? "[४३] बेटा सचाई को जानना चाहता है और वह सचाई फिर उसकी माँ से ही मालूम है। भूख के कारण आदमी आदमी को खा रहा है। यह आज की आधुनिकता है।

७) संघर्ष --

विष्णु प्रभाकर जी की कहानियों में यह एक विशेषताएँ दिखाई देती है। संघर्ष में माँ-बेटे, पति-पत्नी, प्रियकर-प्रेयसी, पुरानी पीढी-नई पीढी, सत्य आदि के बिच संघर्ष का चित्रण विष्णुजी ने अपनी कहानियों में किया हुआ दिखाई देता है। संघर्ष आदमी के जीवन में किसी-न-किसी कारण वश होता ही है। आधुनिक युग में तो संघर्ष पल-पल दिखाई देता है। संघर्ष ने ही आज जीवन में महत्वपूर्ण स्थान ले लिया है। जीवन में संघर्ष होना ही चाहिए लेकिन वह उचित कार्य के लिए हो। तब उस संघर्ष में अगर अच्छी अभिव्यक्ति न होगी तो वह संघर्ष निरर्थक होगा। इसमें कोई शक नहीं है।

`ठेका` इस कहानी में ठेके को प्राप्त करने के लिए अन्तर्गत संघर्ष का चित्रण है। राजकिशोर को मिलने वाला ठेका रोशनलाल की पत्नी सन्तोष उस ठेकेदार के साथ रह कर उसे प्राप्त करती है। पति को अपनी पत्नी अपने पास नहीं है, इसीलिए क्रोध आता है परंतु उन्हें जब ठेका मिल गया है यह मालूम हो जाने से वह अपने पत्नी को बडे प्यार से बाँहों में लेता है। संतोष अपने पति से बोली, "तुम्हें क्रोध आ रहा है। आना ही चाहिए, पर मैं क्या करू ? श्यामा ने वर्मा को तभी छोडा जब पार्टी का समय हो गया। वह उसे वहाँ ले जाना चाहतीथी। वह... ठेका लगभग प्राप्त कर चुकी थी...."[४४] ठेके के कारण पति-पत्नी के बीच जो संघर्ष निर्माण होता है वही कुछ क्षण में नष्ट हो जाता है।

`मेरा बेटा` इस कहानी में हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष का चित्रण हुआ है। हिन्दू-मुस्लिम के बीच जो धर्म की दीवार है उसके कारण उनके बीच में संघर्ष निर्माण होता है। पिता पुत्र से प्रेम करते है परंतु वे उसे धर्म की दीवार के कारण अपना पुत्र मानने को तैयार नहीं। उनके मन में उसके बारे में प्रेम जरूर है परंतु वह बाह्यरूप से

स्पष्टतासे नहीं स्विकार सकते । इसीलिए बेटा अपने बाप से नफरत करता है । रामप्रसाद जब हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष में जख्मी हो गए थे तब डा.हसन उसके बारे में अपने पिता अब्बा को कहता है । तब अब्बा उसे कहते हैं," हाँ, मैं कानपुर के रामप्रसाद को जानता हूँ और मैं उससे नफरत करता हूँ...." [४५]

` शरीर से परे ` इस कहानी में पति-पत्नी के बीच संघर्ष दिखाया है । पत्नी अपने पति होते हुए भी किसी दूसरे साहित्य कार से प्रेम करती है । परंतु वह साहित्यकार उसे नहीं चाहता । यह पति को न मालूम होने के कारण उन दोनों के बीच हर समय संघर्ष निर्माण होता है । पति - पत्नी के बीच जो प्यार था वही धीरे-धीरे कम होने लगता है । पत्नी रश्मि,प्रदीप के साहित्य को पढती है यह देखकर पति सुरेश क्रोध से बोला," किसी को जानने के लिए उसकी हर पुस्तक पढना जरूरी नहीं । प्रदीप तुम्हारे अतिरिक्त और किसी का चित्रण नहीं कर सकता ।"[४६] जब झूठ और सच का फैसला प्रदीप से ही हो जाता है तब सुरेशके मन में उन दोनों के बारे में प्यार निर्माण हो जाता है ।

` स्वर्ग और मर्त्य ` इस कहानी में सौन्दर्य को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पडता है यह बताया है । राजा नहुष शचि इन्द्राणी के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उसे पाने की इच्छा प्रगट करते है परंतु देव लोक वासियों में एक मत नहीं होता । इन्द्राणी महाराज से एक शर्त करती है और उसकी पूर्ति भी होती है । राजा की पालकी उठाने वाले ऋषि उनकी पालकी को पटक देते है जिससे राजा नहुष गिर जाता है । उसके मन में जो वासना निर्माण हो गई थी वह और ही तेज हो उठती है । परंतु इसमें उसका सर्वस्व नष्ट हो जाता है । इसमें सौन्दर्य को पाने के लिए संघर्ष दिखाया है । महाराज उर्वशी के यौवन और सौन्दर्य की चर्चा करते है तब उर्वशी बोली," अनंत पृथ्वियाँ बनेंगी और नष्ट होंगी । अनंत लोक-लोकान्तर अस्तित्व में आकर विलीन हो जाएँगे पर देवलोक वासी सदा-सदा यौवन की इसी मादकता में बहते रहेंगे ।"[४७]

` मटकन और मटकन ` इस कहानी में एक विधवा और एक नवयुवक के बीच संघर्ष होता है, इसका चित्रण है। सर्वजीत और सौत्वना रेल के एक डिब्बे में बैठकर सफर कर रहे थे। सर्वजीत उसे देख कर उससे प्यार करने लगता है। परंतु सौत्वना एक विधवा होने के कारण वह स्वीकार नहीं करती। सर्वजीत उसके सामने अपना प्रेम व्यक्त करता है तब वह अट्टाहास कर बोली," मुझसे प्रेम करने वालों में एक और इजाफा हुआ। लेकिन सर्वजीत, तुम सचमुच प्रेम करते होते तो बतलाते नहीं।" ४८ सर्वजीत और सौत्वना के बीच जो संघर्ष हो रहा है उसका मार्मिक चित्रण यहा मिलता है।

` एक रात : एक शव ` इस कहानी में माँ बेटे का संघर्ष चित्रित है। माँ अपने पति होते हुए भी देवर से प्रेम करती है यह देखकर पति तालाब में डूब कर जान देता है। इस प्रेम का पता जब बेटों को लगता है तब वे एक एक घर छोड कर चले जाते हैं। एक दिन सुरेश ने माँ से कहा था," माँ, तुमने सदा शासन किया है। तुममें अमित साहस है। फिर तुम इस सत्य को क्यों नहीं स्वीकार करती कि दिनेश भैया और मैं उस पिता की सन्तान नहीं हैं जिसका नाम म्यूनिसिपल कमेटी के रजिस्टर में लिखा हुआ है ? यह क्यों नहीं कहतीं कि तुम उसकी पत्नी नहीं हो ? तुम...." ४९ माँ इस बात का ठीक जवाब न देने के कारण सुरेश भी घर छोडकर जाने की तैयारी करता है। माँ और बच्चों के बीच संघर्ष बढता ही जाता है। प्यार में अन्धी हुई माँ अपने बच्चों को भूलती जा रही है।

` बेमाता` इस कहानी में दो पीढी के बीच में संघर्ष का चित्रण मिलता है। हर नई पीढी अपने पुराणी पीढी को समझाने की कोशिश नहीं करती और इससे उन दो पीढी के बीच संघर्ष निर्माण होता है। संघर्ष के लिए कोई-न-कोई कारण होना जरूरी है। बहू अपने सास को ससुर की बुरी आदत के बारे में हर समय कहती है जिससे संघर्ष निर्माण हो जाता है। इस संघर्ष में बेटा-बहू सभी दूर - दूर जाकर रहने लगते हैं। एक माता को संघर्ष के कारण बेमाता का जीवन जीना पडता है। जगदीश अपने पत्नी को बात समझाने की कोशिश करते है तब पत्नी सरस्वती बोली,

" फिर वही पर । तुम क्या छोटे भाई से भी गए-बीते हो । माँ से साफ बात नहीं कर सकते । यह तुम भी जानते हो कि कभी-कभी तुम्हारे जबान पर ये गालियाँ बुरी तरह आ चढती हैं । हाँ, पीना तुमने अभी नहीं शुरु किया ।"[५०] पति पत्नी के माँ-बाप के और सास-बहू के बीच यह संघर्ष होता रहता है ।

` बस,इतना भर ही` इस कहानी में पति-पत्नी के बीच संघर्ष चित्रित है । पति अरुण और पत्नी इला एक दूसरे पर बेहद प्यार करते है । परंतु अरुण को उसमें जो सौन्दर्य था वही अब नष्ट हो गया है ऐसा लगता है तब वह अपने मित्र की पत्नी मधुरिमा से प्यार करता है । अब उसे अपने पत्नी से भी सुन्दर वही दिखाई देती है । वह अपनी पत्नी को छोड देना चाहता है । उसकी और वह आरोप लगाता है और उसे कहता है तुम अपनी मंजिल पा लो । सुनकर इला ने करुण स्वर में उत्तर दिया " तुमने अपनी मंजिल पा ली है, लेकिन तुम मुझे बताओ,मैं अपनी मंजिल कैसे खो दूँ ? मेरा क्या होगा ? हमारे इन बच्चों का क्या होगा ? ये सब कुछ समझाते हैं । तुम्हारी क्रूरता ने इनके मन-प्राणों को कटुता से भर दिया है । इन सबके भविष्य के बारे में मैं क्या करूँ ?"[५१] सौन्दर्य के कारण पति-पत्नी के बीच संघर्ष होता है जिसमें वे दोनो एक दूसरे से ज्यूदा हो जाते हैं ।

` भोगा हुआ यथार्थ` इस कहानी में धन-संम्पदा के लिए संघर्ष चित्रित है । पारसनाथ बाबू धन को प्राप्त करने के लिए अपने पूरे खानदान को बडी होशियारिसे मिट्टी में मिलाते हैं । पारसनाथ अपने कमरे में सो गए है तब उन्होंने किये हुए कर्मोंका एक-एक पहलू आकर उन्हें याद देने के कार्य करता है वे उसमें डर जाते है । एक बार उनका माँ- जाया बडे भाई की मूर्ति आकर बोली," हाँ, मैं निरंजन ही हूँ । माँ-बाप के मर जाने के बाद जायदाद के बँटवारे को लेकर कैसे तूफान खडा हो गया था । जायदाद हमेशा तूफान ही पैदा करती है है न ? प्यार जता-जता कर तूने पहले मुझे आश्वस्त कर दिया कि मैं बीमार हूँ । फिर गलत दवाईयाँ खिला-खिलाकर मेरा दिमाग खराब कर दिया । उसके बाद किस - किससे न कहकर मुझे पागलखाने भिजवा दिया । उस दिन तू कितना रोया था । हर तीसरे महीने तू मुझे देखने पागलखाने जाता था कि मैं कहीं निकल न भागूँ ।

लेकिन वे कब तक मुझे रखते। तीन वर्ष बाद वहाँ से बाहर आ गया। तब तक काफी अकलमन्द हो गया था। चाहा था तुझसे दूर रह कर जिन्दगी को नया मोड दूँ, लेकिन तूने मेरी शादी ही नहीं होने दी।"[५२] स्वार्थ के लिए पारसनाथ-बाबू सब कुछ करते है लेकिन उसमें उनका अन्त हो जाता है।

` चिरन्तन सत्य ` इस कहानी में सन १९४२ की घटना एस.पी.को याद आती है उसका चित्रण है। एस.पी.साहब ने लोगोंपर अन्याय किये थे। उनको उस घटना का याद आता रहता है। उनका बेटा पुलिस में भरती हो जाता है तब वे उन्हें कहते है कि चुनाव का समय है और यह कार्य दिखाने का मौका है। वे अपने पुत्र को कहते है," गद्दी पर बैठने के लिए ये जनतंत्रवादी लोग कितना लडते है पर यह नहीं जानते कि शासन करनेवाले हम है। हम जो उन्हें अपने इशारे पर नचाते हैं। हम जो शक्ति हैं। हम जो शाश्वत है,चिरन्तन सत्य है।"[५३] जनता और पुलिस वालों के बीच जो संघर्ष निर्माण होता है उसमें पुलिसवालों की जीत हो जाती है और जनता की हार।

८) अन्धविश्वास एवं रूढिपरम्परा --

अन्धविश्वास एवं रूढि परंपरा का चित्रण विष्णु प्रभाकर जी की कुछ ही कहानियों में मिलता है। अन्धविश्वास समाज को लगा हुआ एक दाग है। जो आसानीसे नहीं मिट सकेगा। अन्धविश्वास के कारण लोग अपनी उन्नति को खो बैठते है। उनका विकास नहीं हो पाता। वे हर समय इन विचारों में गढे हुए रहते है। आम तौर पर यह अन्धविश्वास की भावना अनपढ,गवार आदि लोगों में दिखाई देती है। उन्हें सचाई क्या है यह मालूम नहीं होता और वे जानने की कोशिश भी नहीं करते। अत: अन्धविश्वास और रूढिपरंपराओं पर प्रकाश डालने का कार्य कुछ मात्रा में विष्णुजी ने किया है।

` नाग-फाँस ` इस कहानी में अन्धविश्वासका चित्रण मिलता है। लाला - चन्द्रसेन निम्नवर्ग के व्यक्ति है।उनकी पत्नी ने चौदह पुत्रों को जन्म दिया था पर अब उनके पास सिर्फ दोही है। कुशल की शादी तय हो जाने पर वह घर छोडकर

माग चला जाता है और जो छोटा सुशील है वही बहुत बीमार है। उसे बचाने के हर प्रयास किये जाते है। परंतु माँ को यही मय है कि अगर वह ठीक हो जायेगा तो मुझे छोडकर चला जायेगा। इसीलिए माँ उसे दवा पिलाती ही नहीं क्योंकि उसे डर है कि वह बेटा पढ लिखकर बडा हो जाने के कारण घर छोडकर जायेगा। बीमारी की जाँच करने के लिए एक दिन स्वयं डाक्टर सुशील की माँ को मालूम न करके उसके कमरे में रात को ठहरते है। डाक्टर और सुशील के पिता ने देखा - " धुन्धले प्रकाश में एक मूर्ति धीरे-धीरे सुशील की खाट के पास पहुँची है। उसने कई क्षण चुपचाप सुशील के मुख को देखा, फिर चूमा, फिर धीरे-धीरे काँपते हाथों से चादर उतार दी। सुशील एक बार खाँसा, फिर पैरों को पेट में समेट लिया। छाया-मूर्ति पीछे हटी। मेज पर दवा की शीशी रखी थी, उसे उठाया और चिलमची में फेंक दिया।" [५४] यह दिखाकर डाक्टर को सुशील के पिता ने कहा की यह माँ का स्नेह पुत्र का काल बना हुआ है डाक्टर। यह माँ का अन्ध-विश्वास है जिसमें अपने सन्तानों को खोने की भावना है।

`कितना झूठ` इस कहानी में पति-पत्नी का प्रेम और बेटे की लालसा का चित्रण है। पूराने कालोसे यह चलता आया है कि बेटा अपने कुलका दीपक होता है। यह रूढिपरंपरा के अनुसार आज आधुनिक युग में भी बेटे को प्राप्त करने में अपने आप को धन्य मानते है। सच तो बेटा या बेटी दोनों समान्ता के साझीदार है। कानून के अनुसार बेटा और बेटी को समान अधिकार है मगर लोग इसका अचरण नहीं करते। बेटी को हर एक पराये घर का धन मानते है और उन्हें बेटे से अलग समझाते है। ऐसे ही लोगों का वर्णन इस कहानी में किया है। जिन्हें बेटी हुई है वे दु:खी दिखाई देते है तो जिन्हें बेटा हुआ है वे आनंदी है। अस्पताल में हर एक महीला और पुरुषों की बाते सुनकर निशिकांत ने कहा," भाई साहब, दुनिया का चक्कर इसी तरह चलता है। लडका - लडकी, जिन्दगी - मौत, सुख-दु:ख ये सब अपनी अपनी बारी से आया ही करते है।" [५५] आज भी मनुष्य प्राणी रूढिपरम्परा से हटना नहीं चाहता।

` तूफान` इस कहानी में अन्धविश्वास का चित्रण है। यात्रा में दूकानदार लोगों को तूफान आने का भय दिखाकर अपना माल बेच देते हैं। ऐसेही एक यात्रा का वर्णन यहाँ है। एक वृध्दा और युवती रश्मि उस तूफान में फंस जाते है। वृध्दा कहा भी ठहरने को तैयार है, परंतु रश्मि नहीं। गोपाल के घर पर वह वृध्दा ठहरना चाहती है परंतु रश्मि नहीं क्योंकि वहाँ गोपल का भाई अजित बीमार है इसीलिए। गोपल को यह ठीक नहीं लगता है तब वह उस पर गुस्सा उतारता है। परंतु वह फिर आकर कहती है, " बडी अभागिन हूँ। माँ ने प्रसूति में ही आँखे मूँद ली थीं। मेरी जवानी में पति साथ छोड गया। एक बेटा था जो बारह वर्ष का होते न होते चला गया। बाप के घर लौटी तो देहरी पर पाँव रखतेही उसने स्वर्ग का रास्ता पकडा। जहाँ जाती हूँ, सर्वनाश साथ जाता है। जिसे प्यार करती हूँ, वही मिट जाता है। मेरी छाया में मौत का वासा है...." [५६]

९) <u>विसंगतियाँ</u> --

प्रत्येक मनुष्य में विसंगति होती है और होनी ही चाहिए। विसंगती मनुष्य के अन्तर के भावों से प्रगट होती है। विसंगती के आधार पर समाज व्यवस्था अवलम्बीत है। विसंगती के कारण मनुष्य ही मनुष्य को निचे दबाए जा रहा है। ऐसी ही कुछ विसंगतियों का चित्रण विष्णु प्रभाकर जी ने अपनी कहानियों में किया है।

` गृहस्थी ` इस कहानी में पारिवारिक चित्रण है। वीणा के पति हेमेन्द्र कुछ भी कमाते नहीं। मगर मित्रों को घर पर लाकर भोजन देते है। लेकिन वह कभी भी दूसरों के घर खाना खाने को नहीं जाते। लोग कुछ ऐसे होते है कि वे दूसरों को कुछ भी नहीं देते मगर दूसरे के घर पर जाकर जो चाहे वही ले आते है। यह विसंगती इसमें दिखाई है। वीणा एक सच्चे दिल की औरत है जो अपने पति के लिए सब कुछ सहती है। उसे अन्त में ज्ञात होता है कि अपने पति का प्यार कितना महान है। वे एक औरत को कहते है, मैं वीणा के बिना कुछ भी नहीं हूँ। अत: वे अपने पत्नी को सबसे जादा प्यार करते हैं। ताकि उन्हें पति परमेश्वर मानने वाली पत्नी मिली है। वीणा को हेमेन्द्र ने पूछा, ` तुमने कुछ नहीं खाया ?`, तब वह क्रोधित होती है यह देखकर हेमेन्द्र मुस्कराकर बोला, " तुम तो वीणा, व्यर्थ ही इतनी तेज होती हो।

अरे मई । वे आ गए तो क्या मैं मनाकर देता ? सब अपने-अपने भाग्य का खाते हैं । दाने-दाने पर मोहर है । बेचारे तुम्हारी तारीफ करते नहीं अघाते थे ।"[५७]

` कितना झूठ ` इस कहानी में लडका और लडकी इनमें विसंगती दिखाई है । वास्तव में लडका और लडकी दोनों एक ही है मगर बहुत से लोग लडकी को गौण स्थान देते हैं और लडके को अपना सब कुछ मानते है । जिन्हें लडकी हो गई है वे दु:खी होते है तो जिन्हें लडका हो गया है वे आनंदी होते है । निशिकांत को लडका हुआ है, मगर वह कुछ समय के बाद मर जाता है । तब उसके सामने सिर्फ एक ही प्रश्न निर्माण होता है कि पत्नी को बचाना । वह अपनी पत्नी को बचाने के लिए झूठ बोलता है । जब निशिकांत का भाई बच्चेकी खबर ले आता है तब निशिकांत सोचने लगा," यह दुनिया ,यह सृष्टि,जीवन से मृत्यु,मृत्यु से जीवन,यह कैसा निर्माण चक्र । यह प्रेम, यह वासना,सबका वही एक अन्त ।"[५८] जीवन की विसंगतियों का बडा मार्मिक चित्रण इसमें मिलता है ।

` मेरा बेटा` इस कहानी में हिन्दू-मुस्लिम के बीच जो विसंगतियाँ हैं उनका चित्रण मिलता है । डा.हसन के पिता अब्बा का एक हिन्दू पुत्र है जिसका नाम रामप्रसाद है । हिन्दू-मुस्लिम के कारण दोनों के बीच जो धर्म की दीवार खडी है उसके कारण उन दोनों के जीवन में संघर्ष और विसंगती निर्माण हो जाती है । हर एक धर्म अपने आप को श्रेष्ठ समजता है और धर्म-धर्म के बीच संघर्ष खडे करके अपना और दूसरे का भी विनाश कर देते है । अब्बा रामप्रसाद को अपना बेटा मानने को तैयार है । लेकिन बेटा धर्म के कारण अपने बाप को मानने को तैयार नहीं । यह विसंगति सिर्फ धर्म के कारण ही निर्माण हो गई है ।

` हिमालय की बेटी ` इस कहानी में प्रेम की विसंगती दिखाई है । रेवती एक हिमप्रदेश की युवती है । उससे श्रीधर और कुशलानंद प्रेम करते हैं । रेवती दोनों को भी चाहती है मगर कुशलानंद से वह श्रीधर से जादा प्रेम करती है । जिसका नतिजा वह गर्भवति हो जाती है । यह देखकर कुशलानंद उसे शादी की लालसा दिखाकर सेना में चला जाता है । तब उसके सामने तूफान खडा हो जाता है और उस तूफान में उसे श्रीधर सहारा देकर उससे विवाह करता है । फिर भी

वह कुशलानंद को अपने दिल से नहीं हटाती यह देखकर श्रीधर शराब पीने लगता है। रेवती इस अवस्था के लिए श्रीधर को कभी दोष नहीं देती। वह बार-बार अपने को धिक्कारती और कहती," यह ठीक हुआ। मुझ जैसी पापिष्ठा के लिए इसी की जरूरत थी।" ५९

` शरीर से परे ` इस कहानी में विसंगति को उभारा है। सुरेश की पत्नी रश्मि प्रदीप से प्यार करती है मगर प्रदीप उसके जीवन में तूफान खडा नहीं करना चाहता। वह उसे नहीं चाहता लेकिन सुरेश को इस बात पर यकिन नही होता तब वे पति-पत्नी के बीच संघर्ष निर्माण होता है। इस बात का पता प्रदीप को लगने से वह उस शहर को छोडकर जाता है परंतु जाते समय एक पत्र सुरेश के हाथ में दे देता है। जिसमें लिखा है मेरे कारण आपके शांत जीवन में तूफान आ गया है, पर विश्वास करिए मैंने इसे कभी नहीं चाहा। इस बात से सुरेश के मन में जो भाव थे वह नष्ट हो जाते है। तब सुरेश रश्मि से बोला," रश्मि, मैं पापी हूँ। मैंने तुम्हें समझा नहीं .... ।` चुप नहीं करोगे। ` नहीं,नहीं आज कह लेने दो। मैंने प्रदीप को लेकर तुम्हें कितना दु:ख दिया। रश्मि, अब मुझे तभी सुख होगा जब तुम उससे मिलोगी। तुम उससे मिलो,उसकी पुस्तकें पढो,उसे बुलाओ। मुझे तुम पर विश्वास है।" ६० इसी तरह इनके जीवन में जो विसंगती निर्माण हो गई थी वह धीरे-धीरे नष्ट होती रही।

` छोटा चोर बडा चोर ` इस कहानी में एक एक को चोर साबित किया है। मगर हर एक आदमी में फर्क है। कुछ जरूरत के लिए चोरी करते है तो कुछ जरूरत न होने पर भी चोरी करते हैं। वास्तव में दोनों भी चोर है मगर उन दोनों में विसंगति है। छोटा चोर एक बाबू के घर का नौकर है। सर्दी के दिन उसे उसके पिताजी के लिए एक कोट की अवश्यक्ता है और उनके बाबू के पास बहुत से कोट हैं। वो सोचता हैकि इनमें से एक ले लू तो क्या पता उन्हें होता। यह सोचकर वह एक कोट चुरा के लेता है। मगर उसमें घडी की चैन होने के कारण वह वापस लौटा देता है। उसी समय बाबूजी किसी सेठ से रिश्वत के रूप में कुछ चिजे ले रहे थे। मगर बदले में वे कुछ भी देते नहीं यह उन दोनों में विसंगति दिखाई देती है।

निष्कर्ष ---

इस प्रकार विष्णु प्रभाकर जी की कहानियों में अनेक विशेषताएँ मिलती है। विष्णुजी ने अपने साहित्य में झूठ और पाखण्ड ,सामाजिक आदर्श ,विसंगति, घृणा,यथार्थ और सहज संवेदना आदि का चित्रण किया है। विष्णुजी ने यथार्थ भाव को अत्यन्त सहज और चमत्कारिक रूप से अपने साहित्य में लाने की चेष्टा की है। विष्णु प्रभाकर इसी तरह का कार्य आज भी कर रहे है।उनके साहित्य ने हिन्दी को एक महान स्थान पर लाया है। उनके कलम में जो शक्ति है वह उनके साहित्य में देखने को मिलती है। विष्णुजी के कहानी साहित्य में से कुछ संग्रहोंका अध्ययन करके उनके साहित्य की जाच करने की चेष्टा की है। इस शोध-प्रबन्ध के अन्तर्गत कुछ मौलिक कहानियोंका अध्ययन किया है और मैंने अपने कार्य को पूरा करनेका प्रयास किया है।

सन्दर्भ सूची

१.	धरती अब भी घूम रही है	- ठेका,	पृ.७२.
२.	-वही-	- जज का फैसला	पृ.८०.
३.	- वही -	- अधूरी कहानी	पृ.१०१.
४.	- वही -	- साँचे और कला	पृ.४९
५.	- वही -	- समझौता	पृ.८८
६.	पुल टूटने से पहले	- एक मौत समंदर किनारे	पृ.३५
७.	-वही -	- सलीब	पृ.१५५
८.	एक और कुन्ती	- चन्द्रलोक की यात्रा	पृ.४६
९.	-वही-	- राजनर्तकी और क्लर्क का बेटा	पृ.१०१
१०.	धरती अब भी घूम रही है	- धरती अब भी घूम रही है	पृ.१
११.	- वही -	- चाची	पृ.१५१
१२.	साँचे और कला	- पूरानी कहानी	पृ.७६
१३.	पूल टूटने से पहले	- एक अन चिन्हा इरादा	पृ.१२०
१४.	धरती अब भी घूम रही है	- शरीर से परे	पृ.१६७
१५.	साँचे और कला	- स्वर्ग और मर्त्य	पृ.६
१६	वही	- छोटा चोर बडा चोर	पृ.६८
१७	पूल टूटने से पहले	- एक रात : एक शव	पृ.५१
१८	वही	- ढोलक पर थाप	पृ.९७-९८
१९	एक और कुन्ती	- सत्य को जीने की राह	पृ.४
२०	वही	- एक और कुन्ती	पृ.११-१२
२१	वही	- चैना की पत्नी	पृ.७४
२२	वही	- चिरन्तन सत्य	पृ.९०
२३	धरती अब भी घूम रही है	- गृहस्थी	पृ.३३
२४	वही	- अभाव	पृ.१३२
२५	साँचे और कला	- नई ज्यामिति	पृ.३६

२६	पूल टूटने से पहले	-	सलीब	पृ.१५२
२७	धरती अब भी घूम रही है	-	सम्बल	पृ.६१
२८	वही	-	आश्रिता	पृ.१११
२९	साँचे और कला	-	छोटा चोर बड़ा चोर	पृ.६९
३०	पूल टूटने से पहले	-	भटकन और भटकन	पृ.२६
३१	वही	-	राजम्मा	पृ.७४
३२	वही	-	राग और अनुराग	पृ.१४४
३३	धरती अब भी घूम रही है	-	धरती अब भी घूम रही है	पृ.७
३४	वही	-	रहमान का बेटा	पृ.२९-३०
३५	वही	-	अधूरी कहानी	पृ.९५
३६	वही	-	मेरा बेटा	पृ.१२७
३७	पुल टूटने से पहले	-	पुल टूटने से पहले	पृ.११
३८	वही	-	फासिल इन्सान और ...	पृ.८९
३९	वही	-	अँधेरे आँगन वाला मकान	पृ.१६३
४०	एक और कुन्ती	-	एक और कुन्ती	पृ.१५
४१	वही	-	चन्द्रलोक की यात्रा	पृ.४०
४२	वही	-	राज नर्तकी और क्लर्क का बेटा	पृ.१०३
४३		-	भूख और कुलीनता	पृ.११४
४४	धरती अब भी घूम रही है	-	ठेका	पृ.७५
४५	वही	-	मेरा बेटा	पृ.१२४-१२५
४६	वही	-	शरीर से परे	पृ.१६६
४७	साँचे और कला	-	स्वर्ग और मर्त्य	पृ.५
४८	पुल टूटने से पहले	-	भटकन और भटकन	पृ.२६
४९	वही	-	एक रात: एक शव	पृ.५५
५०	वही	-	बेमाता	पृ.६७
५१	वही	-	बस इतना भर ही ...	पृ.१०८
५२	वही	-	भोगा हुआ यथार्थ	पृ.१२५

५३	एक और कुन्ती	-	चिरन्तन सत्य	पृ.९५
५४	धरती अब भी घूम रही है	-	नाग फाँस	पृ.५४
५५	वही	-	कितना झूठ	पृ.८९
५६	एक और कुन्ती	-	तूफान	पृ.३७
५७	धरती अब भी घूम रही है	-	गृहस्थी	पृ.४२
५८	वही	-	कितना झूठ	पृ.८७
५९	वही	-	हिमालय की बेटी	पृ.१४२
६०	धरती अब भी घूम रही है	-	शरीर से परे	पृ.१७०